सर्दी के मौसम में मछली उत्पादन प्रबंधन:- डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं



प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर।









.

आईआईटी कानपुर: MBA प्रोसाम ने दर्ज किया 100% प्लेसमेंट रिकॉर्ड

Home / समाचार / कृषि / सर्दी के मौसम में इस प्रकार करें मछली उत्पादन प्रबंधन : डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव



सर्दी के मौसम में इस प्रकार करें मछली उत्पादन प्रबंधन : डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपित डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में शुक्रवार मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।

भोजन के रूप में मछिलयों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी में उथल पुथल करके मछिलयों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछिलया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछिलयों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछिलयों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछिलयों की बढ़वार लगातार जारी



दैनिक

काशित लखनक, उज्ञाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मीहदा, बादा, फतोहपुर, प्रयागगळ, इटावा, कन्नीज, गाजीपुर, कालपुर देहात, बहराइच में प्रसारित

निका, राजान प्रतानापा र पूर्व <u>जनारा नग नगीनी नग</u> ए<mark> कि दुष्णावस्युक्त प्रियोग प्रतास स्वर्णामा राज्यामा अस्पतास अस्पतास</mark>

मछलियों को भाग दौड़ कराकर उनका त्यायाम भी आवश्यक-डॉ. आनन्द

आज का कानपुर

कानपुर।सीएसए के कुलपित डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछित्यां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में खुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सिर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछित्यां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए उथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।

Sign in to edit and save changes to this life.

www.facebook.com/worldkhabarexpress

www.twitter.com/worldkhabarexpress

www.youtube.com/worldkhabarexpress



युक्रवार, 28-01-2022 अंक-27

www.worldkhabarexpress.media www.worldkhabarexpress.com



MID DAY E-PAPER

मछलियां पानी से ऊपर मुंह निकालें तो समझ लेना ऑक्सीजन की जरूरत

सर्दी के मौसम में मछली उत्पादन, प्रबंधन के लिए डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने जारी की एडवाइजरी, बोले, मछलियों के लिए ऑक्सीजन अहम

कानपुर। चंद्रतेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विजवविद्यालय बारपुर के कुल्पति डॉक्टर बीआर सिंह के निर्देश पर मत्स्य प्रभागे डॉ. आचंद स्वरूप श्रीयास्तव ने मत्स्य उत्पादकों के लिए एडपाइक्ग्री कारी की है। उन्होंने बताया कि लदियों में बोडरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालावी को समुचित सूर्य का प्रकाश वहीं मिल पता है। जिसके कारण जलीव पौजी द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिवाम स्वरूप तालाय के जल में पुलित ऑक्सीयन की कमी हो जाती है।

ऑक्टर जीवास्तव ने बतापा कि मत्त्र्य तालाओं में ऑक्सोजन की मात्रा पांच पीपीएम आवस्पक होती



है। ऐसी स्थिति में मतस्य पालक जब तालाब में देखें की महातियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकास रही हैं। तो मतस्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन को कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डोडे से पीटकर या मानव



अम द्वारा पानी में उथल-पुबल करने से वातावरन की ऑक्सी वन पानी में पुल जाती है। ताजे पानी के फल्यारे के रूप में तालाय में उपलने से ऑक्सी उन की कभी से यया जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सी वन का संतुलन बनाने के लिए लाल दवा (पोटेशियम

परमैग्नेट) तालाव के पानी में मिलाना चाडिए। उन्होंने बताया कि साँदेवों के मीसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्चल ब्लूम की है। इसमें तालाब का चानी अल्पाधक हरे रंग कर हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है। इसके कारण महालियां



की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल डालकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग विहानिक वा विशेषहों की सलाह के अनुसार कर पानी के पीएच मान को 7.5 निधारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। भोजन के रूप में मझलियों

को चायल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्र में मिला कर सुबह एक निश्चित समय पर देना चित्रिए। साथ ही चानी में उत्रल पथल करके महातियों को भाग दीड करा कर उनका व्यायाम भी आवस्पक है। इससे माइलिया भोजन भी ग्रहण करेगी और उनकी बब्रवार भी ठीक खेगी। सर्दियों के मीराम में मललियों की बढ़ोतरी कम होती है, वर्षोंकि महलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 दिखी होना चहिए। उन्होंने लोगों को सलाह दी कि पानी की आपूर्ति फलारे के रूप में करते रहें, जिससे म्छलियों की बद्धवार लगातार जारी रहे।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमा दुडे

वर्षः १३

अंक:07

देहरादून, शुक्रवार, २८ जनवरी, २०२२

पृष्टः08

6 JANMAT TODAY



Dehradun 28 January, 2022

मत्स्य उत्पादकों के लिए जारी की गई एडवाइजरी

दीवक गीड़ (जनसर ट्रां)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय करनपुर के मतस्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेत् एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सुर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जातीय पौधों द्वारा प्रकाश संक्रलेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉक्टर श्रीवास्तव ने बलाया कि मतस्य वालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्वक होती है ऐसी स्थिति में मतस्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर



अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्लीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव अम द्वारा पानी में उधल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्चारे के



स्त्र में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटेशियम परमैगट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में भूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यक्षिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी रिधाति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषझों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा भोजन के रूप में मछितयों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए साथ ही पानी में उथल पूथल करके मछलियों को भाग दौड करा कर उनका व्यावाम भी आवश्यक है इससे मछलियां शोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्चारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

वर्ष १६ अंक २८ पृष्ट-८ मूल्य-१ रू० कानपुर, शनिवार २९ जनवरी २०२२

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

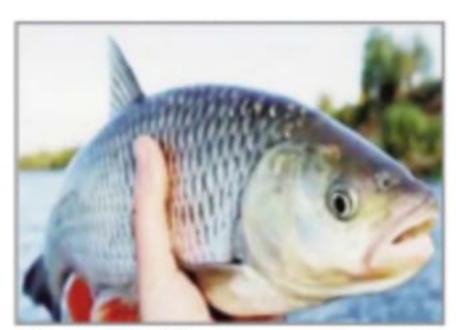


सर्दी के मौसम में मछलियों को न होने दें ऑक्सीजन की कमी

कानपुर (नगर समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के ऋम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में



डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान



को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी में उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फळ्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।



कानपुर, शनिवार २९ जनवरी २०२२

मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद ने मत्स्य उत्पादकों कै लिये एडवाइजरी की जारी

मछिलयों को भाग दौड़ कराकर उनका व्यायाम भी आवश्यक : डॉ आनन्द

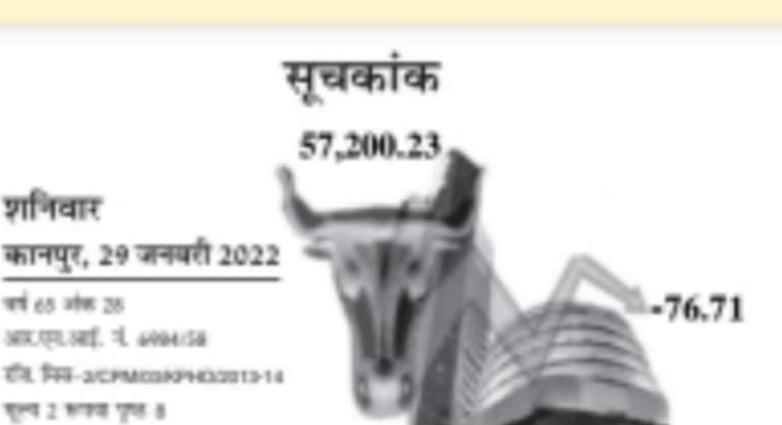
कानपुर 7 सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के ऋम में आज मतस्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेत् एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मलय वालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालावों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सत्तह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही है तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्चारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की



कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का

हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा।भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिला कर प्रातः काल एक निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही पानी में उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलिया भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी। सर्दियों के मीसम में मछलियों की बड़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फळ्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.



हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक

e-paper: www.vyaparsandesh.com

शनिवार

वर्ष ६५ अंक ३६

शून्य 2 समय एक 8

मछलियों को उनका व्यायाम भी आवश्यक : डॉ. आनन्द

कानपुर, 28 जनवरी (निस)। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के ऋम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब

के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सोजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछिलयां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या

मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फळ्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में ध्रप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है।

Sign in to edit and save changes to this file.

विशाल प्रदेश हन्दी देनिक

कालपुर, शनिवार ३९ जनवरी ३६६३

मछलियों को भाग दौड़ कराकर उनका व्यायाम भी आवश्यकः डॉ. आनन्द

के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह



में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एलाल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का

कानपुर(विशाल प्रदेश) सीएसए। वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल। निवारण करना चाहिए तथा चूने का

के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा भोजन के रूप में मछलियों को चावल का कना और सरसों की खली को बराबर मात्रा में मिलाकर प्रातः काल एक निश्चित समय

पर निश्चित स्थान पर प्रतिदिन देना चाहिए साथ ही पानी मे उथल पुथल करके मछलियों को भाग दौड़ करा कर उनका व्यायाम भी आवश्यक है इससे मछलियां भोजन भी ग्रहण करेंगी और उनकी बढ़वार भी ठीक रहेगी सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारे के रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे